शुजाअत नाज़ करती है जलालत नाज़ करती है,
वह सल्ताने ज़मा हैं उन पे शौकत नाज़ करती है।

शंहनशाहे शहीदा हो अनोखी शान वाले हो
हुसैन इब्ने अली तुम पर शहादत नाज़ करती है

अपना कुछ क़ीमती वक़्त निकालकर इस रिसाले को ज़रूर पढ़ें

मोहर्रम में क्या करें क्या ना करें

मिनजानिब

पैग़ाम-ए-ताजुश्शरियाह ग्रुप

MOb. 8630955279, 7017507541, 8171573011

नोट : ये रिसाला बा ग़ौर ध्यान से पढ़ें और ज़हनशी रखें हमारे इनामी सवाल जवाब मुकाबले में इसी रिसाले से सवाल पूछें जायेंगे।

पैग़ाम-ए-ताजुश्शरिया ग्रुप के मंसूबात

1. अक़ाईद व अमल पर छोटे छोटे रिसाले छपवाकर शाय करना।
2. महाना ईनामी व इस्लामी सवाल व जवाब मुक़ाबला।
3. ऑनलाइन तालिमुल ताल्लुम (ऑनलाइन नाज़रा कुरआन पढ़ाना)।
4. ग़रीबों की इमदाद व उनके बेहतर मुस्तक़बिल के लिए कोशिश करना।
5. हफ़्ताबारी सवाल जवाब मुफ़्ती साहब के ज़रिये।
6. अवाम में दीनी तालीम को आम करना और मुस्लिम नौजवानों में दीनी तालीम का जज़्बा पैदा करना।
7. जगह जगह मकतब व मदारिस क़ायम करना।
8. ग़रीब मुस्लमानों की कारोबार में मदद करना।
9. पैग़ाम-ए-ताजुश्शरियाह को आम करना।
10. मुसलमानों को भीक मांगने से रोकने की कोशिश करना।
11. शादी ब्याह में ग़ैर शरई व फ़ुज़ूल रस्मों को रोकना और निकाह को आसान करके आम करना।

हमारे इन मन्सूबात पर काम करने और अमल करने के लिए हमें आपके साथ और माली इमदाद की ज़रूरत है आप जो भी इमदाद करना चाहें। वह नीचे दिए गये बार कोड पर कर सकते हैं।

बरेली शरीफ़ के मुहल्ला स्वाले नगर में हमारा एक मदरसा

मदरसा गौसिया लिलबनातिस स्वालेहात

चल रहा है जिसमें बरेली शरीफ़ की बहुत सी बच्चियाँ ज़ेरे तालीम हैं जिसमें दरसे निज़ामी के साथ साथ दुनियावी उलुम भी पढ़ाये जाते हैं।

ACCOUNT DETAILS :
BANK : STATE BANK OF INDIA
NAME : RIZWAN
ACCOUNT NO.: 40286337767
IFSC CODE : SBIN0009020
PHONE PAY NO.: 8630955279

हमारे पैग़ाम-ए-ताजुश्शरियाह लेडीज़ एण्ड जेन्ट्स ग्रुप में शामिल होने के लिए राब्ता करें 7017507541

मोहर्रम में क्या करें क्या ना करें

प्यारे इस्लामी भाईयो मज़हबे इस्लाम में एक "अल्लाह" की इबादत ज़रूरी है साथ ही साथ उसके नेक बन्दों से मुहब्बत व अक़ीदत भी ज़रूरी है अल्लाह के नेक अच्छे और मुक़द्दस बन्दों से असली सच्ची और हक़ीकी मोहब्बत तो यह है कि उनके ज़रिये अल्लाह ने जो रास्ता दिखाया है उस पर चला जाये उनका कहना माना जाये अपनी ज़िन्दगी उनकी ज़िन्दगी की तरह बनाने की कोशिश की जाये इसके साथ साथ इस्लाम के दायरे में रह कर उनकी याद मनाना उनका ज़िक्र और चर्चा करना उनकी यादगारें क़ायम करना भी मुहब्बत व अक़ीदत है और अल्लाह के जितने भी नेक और बरगुज़ीदा बन्दे हैं उन सबके सरदार उसके आख़री रसूल हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं उनका मर्तबा इतना बड़ा है कि वह अल्लाह के महबूब हैं और जिसको दीन व दुनिया का जो कुछ भी अल्लाह ने दिया है और देता है और देगा सब उन्हीं का ज़रिया वसीला और सदक़ा है उनका जब विसाल हुआ और जब दुनिया से तशरीफ़ ले गये तो उन्होने अपने क़रीबी दो तरह के लोग छोड़े थे एक तो उनके साथी जिन्हें सहाबी कहते हैं इनकी तादाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विसाल के वक़्त एक लाख से भी ज़्यादा थी दूसरे हुज़ूर की आल औलाद और

आपकी पाक बीवियां जिन्हे अहले बैत कहते हैं हुज़ूर के क़रीबी इन सब लोगो से मुहब्बत रखना मुसलमान के लिये निहायत जरूरी है हुज़ूर के अहले बैत हों या आपके सहाबी! इन में से किसी को भी बुरा भला कहना या उनकी शान में गुस्ताख़ी और बेअदबी करना मुसलमानों का काम नहीं है ऐसा करने वाला गुमराह व बद दीन है उसका ठिकाना जहन्नम है हुज़ूर के अहले बैत मे एक बड़ी हस्ती इमाम आली मक़ाम सैयदना "**हुसैन**" भी हैं उनका मर्तबा इतना बड़ा है कि वह हुज़ूर के सहाबी भी हैं और अहले बैत में से भी हैं यानि आपकी प्यारी बेटी के प्यारे बेटे आपके प्यारे और चहीते नवासे हैं रात रात भर जाग कर अल्लाह की इबादत करने वाले और क़ुराने अज़ीम की तिलावत करने वाले मुत्तक़ी, इबादत गुज़ार, परहेज़गार, बुज़ुर्ग अल्लाह के बहुत बड़े वली हैं साथ ही साथ मज़हबे इस्लाम के लिये राहे ख़ुदा में गला कटाने वाले शहीद भी हैं मोहर्रम के महीने की दस तारीख़ को जुमे के दिन 61 हिजरी यानि हुज़ूर के विसाल के तक़रीबन पचास साल के बाद आपको और आपके साथियों और बहुत से घर वालों को ज़ालिमों ने ज़ुल्म करके करबला नाम के एक मैदान में तीन दिन प्यासा रखकर शहीद कर दिया इस्लामी तारीख़ का यह एक दिल हिला देने वाला हादसा है और 10 मोहर्रम जो कि पहले ही से एक तारीख़ी और

यादगार दिन था इस हादसे ने उसको और भी ज़िन्दा जावेद कर दिया और इस दिन को हज़रत इमाम हुसैन के नाम से जाना जाने लगा और गोया यह हुसैनी दिन हो गया और बे शक ऐसा होना ही चाहिये लेकिन मज़हबे इस्लाम एक सीधा सच्चा संजीदगी और शराफ़त वाला मज़हब है और इसकी हदें मुकर्रर हैं लिहाज़ा इसमें जो भी हो सब मज़हब और शरियत के दायरे में रहकर हो तब ही वह इस्लामी बुज़ुर्गो की यादगार कहलायेगी और जब हमारा कोई भी तौर तरीक़ा मज़हब की लगाई हुई चार दीवारियों से बाहर निकल गया तब वह ग़ैर इस्लामी और हमारे बजुर्गो के लियें बाइसे बदनामी हो गया हम जैसा करेंगे हमें देखकर दूसरे मज़हबो के लोग यही समझेगें कि इनके बजुर्ग भी ऐसा करते होंगें क्योकि क़ौम अपने बजुर्गो और पेशवाओं का तआ़रूफ़ होती है हम अगर नमाज़ें पढ़ेंगे, क़ुरान की तिलावत करेंगें जुऐ शराब गाने बजाने और तमाशो से बचकर ईमानदार, शरीफ़ और भले आदमी बन कर रहेंगे तो देखने वाले कहेंगे कि जब यह इतने अच्छे है तो इनके बुजुर्ग कितने अच्छे होंगे और जब हम इस्लाम के ज़िम्मेदार ठेकेदार बनकर इस्लाम और इस्लामी बजुर्गो के नाम पर ग़ैर इन्सानी हरकतें करेंगे तो यक़ीनन जिन्होंने इस्लाम का मुतआ़ला नही किया है उनकी नज़र में हमारे मज़हब का ग़लत तआ़रूफ़ होगा और फिर कोई क्यों

मुसलमान बनेगा ? हुसैनी दिन यानि 10 मुहर्रम के साथ कुछ लोगों ने यही सब किया और इमाम हुसैन के किरदार को भूल गये और इस दिन को खेल तमाशों, ग़ैर शरअ़ी रुसूम नाच गानों, मेलों ठेलों और तफ़रीहो का दिन बना डाला और ऐसा लगने लगा कि जैसे इस्लाम भी दूसरे मज़हबो की तरह खेल तमाशो, तफ़रियों और रगं रंगेलियों वाला मज़हब है मुसलमान कहलाने वालो में एक नाम निहाद इस्लामी फ़िरका जिसे राफज़ी या शिया कहा जाता है उनके यहाँ नमाज़ रोज़े वगैरह अहकामे शरअ़ और दीनदारी की बातों को तो कोई ख़ास अहमियत नही दी जाती बस मोहर्रम आने पर रोना, पीटना, चीख़ना, चिल्लाना, कपड़े फ़ाड़ना व सीने पीटना ही उनका मज़हब है गोया कि उनके नज़दीक अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल को इन्ही कामों को करने और सिखाने को भेजा था और इन्ही सब बेकार बातों का नाम इस्लाम है हांलाकि हदीसे पाक मे है।

"हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं जो किसी के ग़म में गाल पीटे, गिरेबान फ़ाड़े ज़माना–ए–जाहिलियत की सी चीख़ पुकार करे वह हम मे से नहीं (मिशकात पेज 150)

मज़हबे अहले सुन्नत वल जमाअ़त में से भी बहुत से अवाम कुछ राफ़जियों के असरात और कुछ हिन्दुस्तान के पुराने ग़ैर मुस्लिमों जिनके यहाॅ धर्म के

नाम पर जुए खेले जाते हैं शराबें पी जाती हैं जगह जगह मेले लगा कर मर्दों औरतों को जमा करके बे हयाई की बातें कराई जाती हैं उनकी सोहबतों में रहकर इनके पास बैठने, उठने रहने सहने की नतीजे में खेल तमाशों और वाहियात भरे मेलो को ही इस्लाम समझने लगे और बांस काग़ज़ और पन्नी के मुजस्समे बनाकर इन पर चढ़ावे चढ़ाने लगे।

दर असल होता यह है कि ऐसे काम कि जिसमें लोगों को खूब मज़े और दिल लगी आये तफ़री और चटख़ारे मिलें उनका रिवाज अगर कोई डाले तो वह बहुत जल्दी पड़ जाता है और क़ौम बहुत जल्दी उन्हें अपना लेती है और जब धर्म के ठेकेदार उनमें सवाब बता देते हैं तो अवाम उन्हें और भी मज़े लेकर करने लगते हैं कि यह खूब रही रंगरंगिलियां भी हो गई और सवाब भी मिला तफ़री और दिललगी भी हो गई खेल तमाशे भी हो गये और जन्नत का काम, कब्र का आराम भी हो गया मौलवी साहब या मियां हुज़ूर ने कह दिया है कि सब जाइज़ व सवाब का काम है ख़ूब करो और हमने भी ऐसे मौलवी साहब को नज़राना देकर ख़ुश कर दिया है और उन्होंने हमको ताज़िये बनाने, घुमाने, ढोल बजाने और मेले ठेले लगाने और इनमें जाने की इजाज़त दे दी है अल्लाह नाराज़ हो या उसका रसूल ऐसे मौलवियों और पीरों से हम ख़ुश वह हमसे ख़ुश

इस सबके बावजूद अवाम में ऐसे लोग भी काफ़ी हैं जो ग़लती करते हैं लेकिन उसको ग़लती नहीं समझते हैं और इन हराम को हलाल बताने वाले मौलवियों की भी उनकी नज़र में कुछ औक़ात नही रहती एक गांव का वाक़्या है कोई ताज़िये बनाने वाला कारीगर नहीं मिल रहा था या बहुत सी रक़म का मुतालबा कर रहा था तो वहां की मस्जिद के इमाम ने कहा कि किसी को बुलाने की ज़रूरत नहीं है ताज़िया मैं बना दुँगा और इमाम ने गांव वालों को खुश करने के लिये बहुत उम्दा बढ़िया और ख़ूबसूरत ताज़िया बनाकर दिया और फिर इन्ही ताज़िये दारों ने इस इमाम को मस्जिद से निकाल दिया और यह कहकर इसका हिसाब कर दिया कि यह कैसा मौलवी है कि ताज़िये बना रहा है मौलवी तो ताज़ियेदारी से मना करते हैं और मौलवी साहब का बक़ौल शायर यह हाल हुआ कि:–

न ख़ुदा ही मिला न विसाले सनम
न यहां के रहे न वहां के रहे

दरअसल बात यह है कि सच्चाई में बहुत ताक़त है और हक़ हक़ ही होता है और हक़ सर चढ़कर बोलता है और हक़ की अहमियत उनके नज़दीक भी होती है जो हक़ पर नहीं हैं।

बहरहाल इसमें कोई शक नहीं कि एक बड़ी तादाद में हमारे सुन्नी मुसलमान भाई हज़रत इमाम

हुसैन की मोहब्बत में ग़लत फ़हमियों के शिकार हो गये और मज़हब के नाम पर ना जाइज़ तफ़रीह और दिल लगी के काम करने लगे इनकी ग़लत फ़हमियों को दूर करने के लियें हमने यह मज़मून मुरत्तब किया है इस मुख़्तसर मज़मून में हम यह दिखायेंगे कि आज कल मोहर्रम के महीने में इस्लाम व सुन्नियत के नाम पर जो कुछ होता है इसमें इस्लामी नुक़्ता-ए-नज़र से सुन्नी उलेमा के फ़तवों के मुताबिक़ जाइज़ क्या है और ना जाइज़ क्या है किस में गुनाह है और किसमें सवाब। पढ़ने और सुन्ने वालों से गुज़ारिश है वह ज़िद और हटधर्मी से काम न लें मौत व क़ब्र और आख़िरत को पेशे नज़र रखें। मेरे अज़ीज इस्लामी भाईयों हम सब को यकीनन मरना है और ख़ुदाये तआला को मुंह दिखाना है वहां ज़िद व हटधर्मी से काम नहीं चलेगा भाईयो आंख। खोलो और मरने से पहले होश में आ जाओ और पढ़ो समझो और मानो।

ज़िक्रे शाहादत

हज़रत सय्यदना इमाम हुसैन और दूसरे हज़रात अहले बैत किराम का जिक्र नज़्म में या नसर मे करना और सुनना यक़ीनन जाइज़ है और बाइसे ख़ैरो बरकत व नुज़ूले रहमत है लेकिन इस सिलसिले में नीचे लिखी चन्द बातों को ध्यान में रखना ज़रूरी है।

1- ज़िक्र शाहादतैन मे सही रिवायात और सच्चे वाक़्यात ब्यान किये जायें आजकल कुछ पेशावर मुक़र्रिरों और शायरों ने अवाम को ख़ुश करने और तक़रीरों को जमाने के लिये अजीब अजीब क़िस्से और अनोखी निराली हिकायात गढ़ी हुई कहानियां और करामात ब्यान करना शुरू कर दिया है क्योंकि अवाम को ऐसी बातें सुनने मे मज़ा आता है आजकल के अक्सर मुक़र्रिरों को अल्लाह और रसूल से ज़्यादा अवाम को ख़ुश करने की फ़िक्र रहती है और ब ज़ाहिर सच से झूठ में मज़ा ज़्यादा है और जलसे ज़्यादा तर अब मज़े दारियों के लियें ही होते हैं।

आला हज़रत मौलाना शाह अहमद रज़ा ख़ाँ रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं

''शाहादत नामे नज़्म या नसर जो आज कल अवाम में राइज हैं अक्सर रिवायाते बातिला बे सरो पा से ममलू और अकाज़ीबे मोज़ूअ़ पर मुशतमिल हैं ऐसे ब्यान का पढ़ना और सुनना वह शाहादत नामा हो ख़्वाह कुछ और मजलिसे मीलादे मुबारक हो ख़्वाह कहीं और मुतलक़न हराम व न जाइज़ है''

(फ़तावा रिज़विया जिल्द 24 सफ़ा 514 मतबूआ रज़ा फाउंडेशन लाहौर)

2- ज़िक्रे शाहादत का मक़सद इन वाक़ियात को सुनकर इबरत व नसीहत हासिल करना हो और साथ ही साथ स्वालेहीन के ज़िक्र की बरकत हासिल करना भी, रोने और रूलाने के लिये वाक़ियात ब्यान करना

ना जाइज़ व गुनाह है। इस्लाम में तीन दिन से ज़्यादा मय्यत का सोग जाइज़ नहीं आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ बरेलवी फ़रमाते हैं
शरिअ़त में औरत को शौहर की मौत पर चार महीने दस दिन सोग मनाने का हुक्म है औरों की मौत के तीसरे दिन तक इजाज़त है बाक़ी हराम है और हर साल सोग की तजदीद किसी के लिये बिल्कुल हलाल नहीं

(फ़तावा रिज़विया जिल्द नं0 24 सफ़ा 595)

यह रोना और रूलाना सब राफ़जियों शियों के तौर तरीक़े हैं क्योकि उनकी किसमत में ही यह लिखा हुआ है। राफ़ज़ी, शिया ग़म मनाते हैं और ख़ारिजी ख़ुशी मनाते है और सुन्नी वाकि़याते करबला को सुनकर नसीहत व इबरत हासिल करते हैं और दीन की ख़ातिर कुरबानियां देने का सबक़ सीखते हैं और उनके ज़िक्र की बरकत और फ़ैज़ पाते हैं। हां अगर उनकी मुसीबतों को याद करके ग़म हो जाये या आंसू निकल आयें तो यह मुहब्बत की पहचान है। मतलब यह है कि एक होता है ग़म मनाना और ग़म करना और एक होता है ग़म हो जाना। ग़म मनाना और करना ना जाइज़ है और ख़ुद हो जाये तो जाइज़ हैं

ताज़ियेदारी और उलमाये अहलेसुन्नत

कुछ लोग समझते है कि ताज़ियेदारी सुन्नियों का काम है और इससे रोकना मना करना वहाबियों का हालांकि जब से यह ताज़ियेदारी राइज हुई है किसी भी ज़िम्मेदार सुन्नी आलिम ने उसे अच्छा नहीं कहा है।

हिन्दुस्तान में दौरे वहाबियत से पहले के आलिम व बुजुर्ग हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज मोहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि अलैह लिखते हैं।

यानी अशरह मोहर्रम में जो ताज़ियेदारी होती है गुम्बदनुमा ताज़िये और तस्वीरें बनाई जाती हैं यह सब ना जाइज़ है

(फ़तावा अज़ीज़िया जिल्द अव्वल सफ़ा 75)

आला हज़रत मौलाना अहमद रज़ा ख़ाँ बरेलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह जो इमाम अहले सुन्नत कहलाये जाते हैं जिनका फ़तवा सारी दुनिया में माना जाता रहा है वह फ़रमाते हैं।
"अब कि ताज़ियेदारी इस तरीक़ा-ए-नामरज़िया का नाम है क़तअन बिदअ़त व ना जाइज़ व हराम है"

कुछ लोग कहते है कि ताज़िया बनाना जाइज़ है और घुमाना ना जाइज़ आला हज़रत ने इसका भी रद्द फ़रमाया और बनाने से भी मना फ़रमाया वह लिखते हैं।

"मगर इस नक़्ल में भी अहले बिदअ़त से एक मुशाबिहत और ताज़ियेदारी की तोहमत का ख़दशा और आईन्दा अपनी औलाद अहले एतिक़ाद के लिये इबतिलाये बिदआ़त का अन्देशा है। लिहाज़ा रौज़ा-ए-अक़्दस हुज़ूर सैयदुश्शोहदा की ऐसी तस्वीर भी न बनायें

(फ़तावा रज़विया जिल्द 24 सिफ़ा 513 मतबुआ रज़ा फ़ाउण्डेशन लाहौर)

जो लोग कहते हैं कि ताज़िया बनाना अहले सुन्नत का काम है वह आला हज़रत की किताबों का मुताअ़ला करें पचासों जगह उनकी किताबों मे ताज़ियेदारी को ना जाइज़ व हराम और गुनाह लिखा है बल्कि पूरी एक किताब इसी बारे में लिखी है जिसका नाम है

(आलिलइफ़ादह फ़ी ताज़ियातिल हिन्द व ब्याने शहादा)

मुफ़्ती आज़म हिन्द मौलाना शाह मुस्तफ़ा रज़ा खां अलैहि रहमा फ़रमाते हैं

" ताज़ियेदारी शरअ़न ना जाइज़ है"

(फ़तावा मुस्तफ़विया सफ़ा 534 मतबुआ रज़ा एकेडमी मुम्बई)

सदरुश्शरिया हज़रत मौलाना अमजद अली साहब ताज़ियेदारी और उसके साथ जगह जगह जो ख़िलाफ़े शरआ़ हरकात व बिदआ़त राइज हैं उनका ज़िक्र करके लिखते हैं

"यह सब महज़ ख़ुराफ़ात हैं इन सब से हज़रत सय्यदना इमाम हुसैन रज़िअल्लाहो तआला अन्हू

ख़ुश नहीं हैं"

चन्द लाईनों के बाद लिखते हैं

यह वाक़्या तुम्हारे लिऐ नसीहत था और तुम ने इस को खेल तमाशा बना लिया

(बहारे शरिअ़त हिस्सा 16 सफ़ा 248) फ़रमाते हैं।

अब चूंकि ताज़ियेदारी बहुत सी ख़िलाफ़ शरअ़ बातों पर मुशतमिल है लिहाज़ा ऐसी सही नक़्ल भी नहीं बनानी चाहिये।

(फ़तावा अजमलिया जिल्द 4 सफ़ा 15)

हज़रत मौलाना हशमत अली ख़ाँ बरेलवी फ़रमाते है।

ताज़िये बनाना इन्हें बाजे ताशे के साथ धूमधाम से उठाना उनकी ज़्यारत करना उनका अदब व ताज़ीम करना, उन्हें सलाम करना, उन्हें चूमना, उनके आगे झुकना और आंखों से लगाना, बच्चों को हरे कपड़े पहनाना, घर घर भींक मंगवाना, करबला जाना वगैरह शरअन ना जाइज़ व गुनाह है।

(शमा हिदायत हिस्सा 3 सफ़ा 30)

फकीहे मिल्लत मुफ़्ती जलाल उद्दीन साहब अमजदी फ़रमाते हैं

"हिन्दुस्तान में जिस तरह के आमतौर पर ताज़ियेदारी राइज है वह बेशक हराम व ना जाइज़ बिदअ़त -ए-सय्येआ़ है

(फ़तावा फ़ैज उर रसूल जिल्द2 सफ़ा 563)

बच्चों को फ़कीर बनाना

कहीं हज़रत इमाम हुसैन के नाम पर बच्चों को फ़कीर बनाया जाता है और उसके गले में झोली डाल कर घर घर उससे भींक मंगवाते हैं यह भी ना जाइज़ व गुनाह है आला हज़रत फरमाते है।

यूंही फ़कीर बनकर बिना ज़रूरत व मजबूरी भीख माँगना हराम है बहुत सी हदीसें इस मअ़ना पर नातिक हैं और ऐसों को देना भी हराम है।

(फतावा रिज़विया जिल्द 24 सफ़ा 494)

इसके बजाये अपने बच्चों को हज़रत इमाम पाक और उनके घराने के बच्चों की सीरत चाल चलन सिखायें और उनके रंग में रंगे इनकी तरह ज़िन्दगी गुज़ारने का हौसला बतायें, दीनदार बनायें तो यह ख़ालिस इस्लाम है।

पैग़ाम-ए-ताजुश्शरियाह

मुफ़्ती आशिक साहब:- मुहर्रम उल हराम में मुंदरिजा ज़ैल बातों का क्या हुक्म है शादी ब्याह के हवाले से बात डालना या कॉन्टेक्ट करना

हुज़ूर ताजुश्शरियाह :- जायज़ है

मुफ़्ती साहब:- नए काम को शुरू करना

ताजुश्शरियाह :- जायज़ है

मुफ़्ती साहब :-घर बनाना ?

हुज़ूर ताजुश्शरियाह :-जायज़ है

मुफ़्ती साहब :- शादी की तारीख़ रखना ?

ताजुश्शरियाह ! जायज़ है

मुफ़्ती साहब:- नए कपड़े पहनना ?

हुज़ूर ताजुश्शरियाह :- कोई हर्ज नहीं

मुफ़्ती साहब :- कारोबार शुरू करना ?

हुज़ूर ताजुश्शरियाह :-इसमें भी कोई हर्ज नहीं।

मुफ़्ती साहब:- शौहर के लिए बीवी का सवरना ?

हुज़ूर ताजुश्शरियाह :- यह भी कोई मम्नूअ नहीं है

मुफ़्ती साहब :- किसी तकरीब में पर्दे में रहते हुए सुरमा लगाना, मेकअप करना चूड़ियां पहनना

हुज़ूर ताजुश्शरियाह :-जायज़ है

मुफ़्ती साहब:- बच्चों का अक़िक़ा करना ?

हुज़ूर ताजुश्शरियाह :-जायज़ है।

मुफ़्ती साहब:- सियाह, सब्ज़ रंग लिवास मर्द और औरत को पहनना ?

हुज़ूर ताजुश्शरियाह :- सियाह लिबास सोग की अलामत है और इस महीने में राफ़ज़ियों का यह श्यार है

लिहाज़ा सियाह लबास पहनना इस महीने में अहलेसुन्नत को ना जाईज़ व हराम है और इस हुक्म में औरते मर्द दानों शरीक हैं (दोनों को हराम है) और सब्ज़ लिबास भी सोग की अलामत है और मोहर्रम को ताज़िया वग़ैरा और मातम वग़ैरा से जो लोग मनाते हैं और उसमें ताज़ियादारी ना जाइज़ तौर पर और मातम वग़ैरा नोहा ख़्वानी और सीना ज़नी वग़ैरा करते

हैं यह सब्ज़ लिबास उन लोगों का लिबास है इससे भी एहतराज़ लाज़िम है

मुफ़्ती साहब – अगर मोहर्रम के महीने में सालगिराह आ जाये तो तोहफ़े लेने में और देने के बारे में क्या हुक्म है ?

हुज़ूर ताजुश्शरियाह :– सालगिराह जबकि ईसाईयों के तौर पर उन से मुशाबिहत के तौर पर ना हो और शुक्रे विलादत के तौर पर जाइज़ तौर पर शरई हुदूद के दायरे में मनाई जाये तो जिस महीने में हो जाइज़ है।

सवाल 2. मुफ़्ती साहब –ताज़िया का शरई हुक्म क्या है एक मुकर्रिर साहब का बयान है कि ताज़िया आज सुन्नियों की अलामत है और जिस अमल से बद मज़हबों को तकलीफ़ हो ऐसा काम करना चाहिये और उन्होने यह भी कहा कि हुज़ूर मुफ़्तीए आज़म और मौलाना हशमत अली ख़ान मुम्बई में कहीं सोने या चाँदी के ताज़िये की ज़्यारत को जाते थे रहनुमाई फ़रमायें।

हुज़ूर ताजुश्शरियाह :– मुरव्वजा ताज़ियादारी जिसमें ढोल ताशे, बाजे और गली कूंचों में मातम वग़ैरा का बाज़ार गर्म होता है अबरक पन्नी वगैरा से या बहुत बेशकीमती साज़ व सामान से ख़्याली शक्ल इमामे हुसैन के रोज़े की बनाई जाती है और उस तराशीदा ख़्याली शक्ल को इमाम हुसैन का रोज़ा समझा जाता है यह ना जाइज़ व हराम है और यह चन्द वजह से ना जाईज़ व हराम है ढोल, ताशे, बाजे शरअ़न हराम हैं और वह अबरक पन्नी से जो तराशीदा ख़्याली रोज़े की शक्ल बनाई जाती है उसका दस्त बस्त बदस्त गश्त किया जाता है यह भी ना जाइज़ व हराम है और उसको जाकर के दफ़्न कर देते हैं यह माल का ज़्याह (ज़ाये करना)और इसराफ़ है इन सब चीज़ों की बिना पर आला हज़रत ने यह फ़तवा दिया की मुरवज्जा ताज़ियादारी ना जाइज़ व हराम है अलब्तता अगर सही सही करबला–ए– मोअल्ला का नक़्शा इमामे हुसैन के रौज़े का नक़्शा बना कर के घर में रखें अदब के साथ तो यह ऐसा ही है जैसा की काबा मोअज़्ज़मा और मदीना तय्यबा की तस्वीरें लोग अपने घरों में लगाते हैं इसमें हर्ज़ नहीं।

हुज़ूर मुफ़्तीए आज़म हिन्द और दीगर बुज़ुर्ग जिसकी ज़ियारत के लिए जाते थे वह मैंने मुम्बई में गुगारी मुहल्ले में उस ताज़िये को देखा है वह सही तौर पर करबलाए मोअल्ला का सही नक़्शा सुन्नियों ने बनाया है और वह उसका एहतमाम करते हैं लोग जाकर उसकी ज़ियारत करते हैं शरई तौर पर वहाँ पर ढोल ताशे वग़ैरा का मातम वग़ैरा का इरतिकाब नहीं होता हैं और उस ताज़िये को घुमाया नहीं जाता है बल्कि अदब से रखा जाता है और लोग उसकी ज़ियारत करते हैं।